Secretary Dr. Jinnkoo Yaday

Dr. Shiya Shankar Singh Yadav Prof. Makul Raj Mohia Dr. Annol Dipayun Dr. Jui Prakesh Pathuk Dr. Baleshwar Prasad

U.G.C. Serial No. 01, Journal No. 42486

ISSN - 0974-1526

मानव संस्कृति शोध संस्थान, वाराणासी

उरेश्य

- बहेरूम्ब

 मारतीय रहितास, संस्कृति, पर्म, दर्जन, पाम-साहित्य, करता, संगीत, आयुर्वेद, योग एवं तकनीकी जन सम्बन्धी अनेक विवादी पर हों। व कार्य करते करते आयुर्विक प्रयोग के अनुकल करावा।

 एत्तुर गारविष परम्पकारी के अञ्चल्प करार एको के हिन्दु प्रोक्त करता प्रश्न ते गांकृति पर कार्य करता।

 परमू पिकार पोकानों के कार्यम के प्राप्त के रित्त प्रवेश उपने वार्यिक प्रकार प्रोप्त के विवादी कर कार्य करता तथा निरुद्ध अपने प्रवेश करता हो।

 वी स्वाद अर्थिक प्राप्त करता करता के प्राप्त के अर्थ करता तथा के स्वाद करता हो।

 प्राप्त करता करता हो स्वाद करता करता के प्राप्त करता करता करता करता करता है।

 प्राप्त करता है।

 प्त करता है।

 प्राप्त करता है।

 प्राप्त करता है।

 प्राप्त करता है।

- युव भाष-आति लेक्की तथा अन्य सुन्धात (इस्ता) । सोव्युक्तिक प्रतिक्रम् तिकार साम्य कार्यका क्षाण के लिए सोच क्षय्ये करना तथा व्यापकान का आयोकन करना और व्योक्तातित करकारे का अस्ता करना । सहित्य परकार स्विक्तिक प्रत्या कार्यक अस्ताव के लिए से त्रीय भागा-साहित्य, पर्य एट कंड्ब्रीट पर सोध- पूर्ण अध्ययन करना एवं एक-पूर्ण के बीच तादरूच स्वाधित करने का वर्ग बूँहन और उसे मुख्य रहीं पर सोध-
- तिहा एसं संस्कृतिक तान भी जानकारी देव। D. अन्त्रे शीध कार्य सम्बन्धी मोनवाओं के जकल क्रियान्त्रपत्र के लिए एक उच्च स्तरीय प्रम्थान्त्रपत्र के स्वस्था करण।

भावत सास्त्रात शाध संस्थान १४, मारामसूर्य हारावीत, सहेटती-आई० रोड, करीबी, पोत – अवेटप्टल्यू-, माराबी-22 (005 (२०४०) पोत – अवेटप्टल्यू-, माराबी-22 (105 (२०४०) पोत – hirlaryadav@gmail.com; manavsankritiss@gmail.com

website: www.msssvaranasi.com

U.G.C. Serial No. 01, Journal No. 42486

ISSN - 0974-1526

SAMSKRTI SANDHĀNA

SAMSKRTI SANDHĀNA

Volume - XXXI

No. 2

(July-December) 2018

Volume - XXXI No. 2 (July-December) 2018

AN INTERNATIONAL REFERRED JOURNAL

Editor

Dr. Jhinkoo Yadav

भवन्तु मुख्यितः सर्वे सनु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्मवेत्।

Associate Editors Dr. Vinay Kumar, Dr. Baleshwar Prasad



JOURNAL OF THE

MANAY SANSKRITI SHODH SANSTHAN

53, Mahamanapuri Colony, I.Tl. Road, Karaundi,
PO. 8.H.U. Yaranasi-221005 (INDIA)
PN.No. 0542-2570220, Mob. 9451527173
ananaysanskritisi 1987 @gmail.com, jihriku, yadav@gmail.com
website: www.msssvaranasi.com

SAMSKRTI **SANDHĀNA**

VOLUME - XXXI

NO. 2

(July - December) 2018

AN INTERNATIONAL REFERRED JOURNAL



EDITOR DR. JHINKOO YADAV

ASSOCIATE EDITORS DR. VINAY KUMAR, DR. BALESHWAR PRASAD

JOURNAL OF THE MANAV SANSKRITI SHODH SANSTHAN

53, Mahamanapuri Colony, I.T.I. Road, Karaundi, P.O. B.H.U. Varanasi-221005 (INDIA) Ph.No. 0542-2570220, Mob. 9451527173

e-mail: manavsanskritiss1987@gmail.com; jhinku.yadav@gmail.com

website: www.msssvaranasi.com

EDITORIAL BOARD

Prof. Balram Singh, (USA)

Prof. Andrea Loseries (Austria)

Prof. A.L. Katonis (Greek)

Prof. Anura Manatunga (Sri Lanka)

Prof. R.H. Singh, Varanasi (India)

Prof. Om Prakash, Allahabad (India)

Prof. Vibha Tripathi, Varanasi (India)

Prof. J.N. Pal, Allahabad (India)

Prof. P.D. Singh, Varanasi (India)

Dr. B.R. Mani (D.G.), National Museum, New Delhi (India)

Prof. A.K. Rai, Varanasi (India)

Dr. J.B. Shah, Ahmedabad, (India)

Prof. Vibha Upadhyaya, Jaipur (India)

Prof. Bimalendra Kumar, Varanasi (India)

Prof. R.P. Pandey, Gwalior (India)

Prof. Mohd. Naseem, Varanasi (India)

Prof. D.K. Ojha, Varanasi (India)

Dr. G.L. Meena, New Delhi (India)

ISSN-0974-1526

© सचिव, मानव संस्कृति शोध संस्थान,

53, महामनापुरी कालोनी, आई०टी०आई० रोड, करौंदी,

पोस्ट - बी॰एच॰यू॰, वाराणसी-221005 (उ॰प्र॰)

फोन - 0542-2570220, मोबाईल - 9451527173

ईमेल - manavsanskritiss1987@gmail.com; jhinku.yadav@gmail.com

बेव - www.msssvaranasi.com

Annual Subscription

- a. Individual
 - i. Three Years Rs. 5,000 (Five thousand only)
 - i. Five Years Rs. 7,000 (Seven Thousand only)
 - iii. Seven Years Rs. 15,000 (Fifteen Thousand only)
- b. Institutional
 - i. Annual Rs. 2,500 (Two Thousand Five Hundred Only)
 - ii. Three Years Rs. 7,000 (Seven Thousand only)
 - iii. Five Years Rs. 12,000 (Twelve Thousand only)

Foreign annual membership registration fee \$ 50

अक्षर संयोजन :

रमेश चन्द्र एवं अमन केशरी, वाराणसी

मुद्रक :

श्री महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी

Facts stated and opinions expressed are entirely those of the authors, the Manav Sanskriti Shodh Sansthan, Varanasi, accepts no responsibility for them.

विषयानुक्रमणिका Content

			पृष्ठ सं०	
	Editorial		i-iii	
1.	Greek Indologist Dimitrios Galanos Andreas L. Kator	nis	1-4	
2.	नृपुरातात्त्विक अध्ययन के आलोक में जनजातियों में शव-			
	विसर्जन प्रथा निधि पाण्ड	डेय	5-12	
3.	वेदों की औदार्य-भावना खालिद बिन यूसुफ	खां	13-18	
4.	वैदिक परम्परा में विवाह पद्धति: धर्मशास्त्रीय एवं गान्धर्व			
	विवाह के विशेष परिप्रेक्ष्य में विजय कुम	नार	19-25	
5.	Continuity of Indian Civilization: A Study Shashi Kant R	R ai		
	Based on the Archaeological Evidences & Vijay Kum	nar	26-34	
6.	Difference between Ayurveda and Modern			
	Western Medicines Mahendra Nath Sin	gh	35-39	
7.	Paradigm Shift in Indian Philosophy and Culture as Depicted	d		
	in P li Language and Literature Baleshwar Prasad Yad	av	40-46	
8.	पन्चतन्त्र के अपरीक्षितकारकम् में आरोग्य चिन्तन गोपाल लाल मी	ोना	47-53	
9.	Ramnami Tradition of Banaras Jasminder Ka	ıur	54-62	
10.	A Brief Introduction to Tibetan Vajrayana Lobsang Thapka (Chen Sogya	ım)	63-76	
11.	Buddhist Art of Gandhara: A Reappraisal Vinay Kumar	&	77-88	
	Ravindra Kum	nar		
12.	Ashoka as a Protagonist of Environment Arpita Chatterj	ee	89-92	
13.	प्राचीन भारतीय मूर्तिकला में कुछ नए अनुप्रयोग मीनू अग्रव	ाल	93-99	
14.	कला एवं धर्म की दार्शनिकता:बौद्ध धर्म के विशेष			
	सन्दर्भ में प्रमोद कुमार गु	प्ता	100-103	
15.	रानी दमयन्ती पुरातत्त्व संग्रहालय, दमोह की हयग्रीव प्रतिमाएं :			
	शिल्पशास्त्रीय अवलोकन सुरेन्द्र कुमार या		104-110	
	भारतीय साहित्य एवं लोक संस्कृति में हिन्दू संस्कारों का स्वरूप शीतल रा	ाणा	111-114	
17.	अग्निपुराण में ज्योतिष शास्त्र प्रीति कश्यप प	एवं		
	प्रह्लाद सहाय बुनव	कर	115-122	
18.	Krishna's Stories as Depicted in Some Terracotta's			
	of Gupta Period Anand Kumar Gauta	am	123-126	

Role of Religious Institutions in Early Medi	eval		
India	Jhinkoo Yadav	127-132	
काशी की परम्परा में प्रासंगिक कतिपय महिलाएँ	अर्पिता चटजी	133-138	
प्राचीन काशी का आर्थिक विकास	सुनील कुमार पटेल	139-148	
कश्फुल महजूब : तसव्वुफ़ पर एक अद्वितीय पुस्त	तक नुजहत फातिमा	149-156	
संक्षिप्त अध्ययन	विजय शंकर यादव	157-160	
प्रकृति पर्यवेक्षक के रूप में मुगल सम्राट बाबर : बाबरनामा			
के विशेष संदर्भ में		161-174	
पर्यावरण असंतुलन को नियंत्रित करने में जैन धर्म	वे		
<u> </u>		175-182	
77			
में नवीन आयाम		183-190	
The Concept of 'Tree of Life' in Gond Tribal			
Paintings of Madhya Pradesh : Characteristics			
-		191-196	
	शिखा सोनकर	197-203	
•			
•		204-211	
आधुनिक भारतीय कला में जनसामान्य का अंकन ।	itesh Kumar Jangid	212-217	
-			
	Shalini Awasthi	218-246	
Nationalism		247-259	
का आंकलन	प्रिया जायसवाल	260-264	
		265-272	
	India काशी की परम्परा में प्रासंगिक कितपय महिलाएँ प्राचीन काशी का आर्थिक विकास करफुल महजूब: तसळ्युफ पर एक अद्वितीय पुस्त सल्तनत कालीन प्रशासन में उल्मावर्ग की स्थिति: संक्षिप्त अध्ययन प्रकृति पर्यवेक्षक के रूप में मुगल सम्राट बाबर: के विशेष संदर्भ में पर्यावरण असंतुलन को नियंत्रित करने में जैन धर्म संयम की भूमिका रामकुमार के चित्रों में बनारस: आधुनिक भारतीय में नवीन आयाम The Concept of 'Tree of Life' in Gond Tribal Paintings of Madhya Pradesh: Characterist and Significance आधुनिक भारतीय कला में नटराज का स्वरूप मेवाड़ की सभ्यता एवं संस्कृति के इतिहास की व्याख्य लोक साहित्य की दृष्टि में आधुनिक भारतीय कला में जनसामान्य का अंकन प्र Claude Martin of Lucknow: A Small Chapte Heritage of Lucknow Government of India Act, 1935 and Rise of I Nationalism विश्वविद्यालय स्तरीय कला विभाग के शिक्षकों में सम्प्रेषण माध्यमों के प्रित जागरूकता एवं व्यवहानि का आंकलन	काशी की परम्परा में प्रासंगिक कितपय महिलाएँ अपिंता चटजी प्राचीन काशी का आर्थिक विकास सुनील कुमार पटेल कश्फुल महजूब: तसव्वुफ़ पर एक अद्वितीय पुस्तक नुजहत फातिमा सल्तनत कालीन प्रशासन में उल्मावर्ग की स्थिति: एक संक्षिप्त अध्ययन विजय शंकर यादव प्रकृति पर्यवेक्षक के रूप में मुगल सम्राट बाबर: बाबरनामा के विशेष संदर्भ में गुंजन राय पर्यावरण असंतुलन को नियंत्रित करने में जैन धर्म के संयम की भूमिका डिम्पल जैन रामकुमार के चित्रों में बनारस: आधुनिक भारतीय कला में नवीन आयाम शशि कला सिंह The Concept of 'Tree of Life' in Gond Tribal Paintings of Madhya Pradesh: Characteristics and Significance Nausheen Manzoor आधुनिक भारतीय कला में नटराज का स्वरूप शिखा सोनकर मेवाड़ की सभ्यता एवं संस्कृति के इतिहास की व्याख्या: लोक साहित्य की दृष्टि में राकेश कुमार भाटिया आधुनिक भारतीय कला में जनसामान्य का अंकन Jitesh Kumar Jangid Claude Martin of Lucknow: A Small Chapter from the Heritage of Lucknow Government of India Act, 1935 and Rise of Indian Nationalism Poonam Pandey विश्वविद्यालय स्तरीय कला विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता एवं व्यवहारिक प्रयोग का आंकलन प्रिया जायसवाल	

O

Editorial

Present publication is an International referred Journal Samskṛti Sandhāna Vol. XXXI, No. 2, (July-December) 2018 of Manav Sanskriti Shodh Sansthan, Varanasi. All the Research papers are on different aspects of Indian History, Culture, Art, Archaeology, Religion & Philosophy, Language & Literature etc. from ancient to modern times. Our Indian society and culture is claimed to be a progressive society from early Rigvedic era and onwards but due to the invent of Sanskaras in Dharmasutras, shudras were ignored by the privileged class especially by Brahmn priesthood which resulted the outcome of Shramanic culture (Buddhism and Jainism etc.) keeping in view of Social and religious harmony, Social and religious equality amongst all people of Indian sub-continent.

Due to this progressive religious movement, foreign elements could dare to emerge with Indian society and culture. With advent of foreigners, i.e., Yavanas, Śakas, Pahlavas and Kushanas in Indian society from 1st century A.D. and onwards, Indian society was classified in to two classes, i.e. Arya and Anarya (Mleksha, Dasyu or Dasas). These Anaryas (foreigners) were totally ignored and neglected by the Brahmanical social system. But as a ruler, they claimed a respectable position in the society and when their claim was not easily admitted, they dominated over them by force as indicated in Yugapurāṇa section of Gargi Samhitā. A large number of evidences also indicate that same policy was also followed by the later Kushanas. In this way, we find that the socio-political scene was changed during Kushana period. As quoted above, Pali text Angavijja (of 3rd century A.D.) clearly indicates that people of lower varṇas began to adopt the various occupations, earned money and claimed a respectable position in the society.

In ancient Indian society 'silpa' as an occupation was regarded as means of livelihood which according to social norms, was exclusively reserved for Shudras. It seems to be a general notion that dynamics of social changes such as rise of trade, growth of industries, urbanisastion and related socioeconomic mobilities of different class of artists and artisans, etc., have a little effect on devalued and degraded practical aspect of 'silpa' because of the powerful orthodoxy in particular and various other external/internal complexities of socio-religious structure in general. With the exception of some early Vedic and Buddhist texts, almost all the variable literary sources place the artists and artisans within Shudra-varna who were no doubt exploited by the upper varnas. Various literary, epigraphic and art evidences prove that inspite of Shudra varna artisans were considered as an important segment of society. The shilpins were consider in the category of artisan class or guild who were enjoying an honourale status in society during Kushana period. Their mastry in various skills and techniques made them an important and essential part of society. During Kushana period they enjoyed a very high position too. Heads of these guilds were very powerful during these days. With the emergence of different arts and artisan classes who were patronised by Kushana rulers, Mathura (centre of Kushanas) was developed as one of the richest centre of Indian economy. It is because of the close relations and helping attitude to Kushana rulers towards these weaker sections of our Indian society, who not only adopted differnt shilps (means of economic productivities) but also earned a lot to enrich the individual as well as Indian economy as a whole by dint of sincere and hard labour. Due to their rich economy, they got a very respectable position in the society and made a large number of donations for religious purposes. In the list of religious doners, we find inscriptions of goldsmit, ironsmith, kashthakāra, and mrttikara. Mathura Jain inscription of Jamanabhaga gives us clear evidence of the donation of Ayala, the son of Indrasharmana for the Buddhist monks of Suvarnaka Vihar. An other Mathura Jain inscription records the names of Posthasaka Kalvalasa (modern Kalawar), who donated Ayagapatta to Jain munis. In the same way we find many other inscriptions of Gandhika (perfumers), Navakarmika (an overseer worker), Dasa (slave), Ganika (courtesan) and Nartaka (dacner), etc., who made different types of donations for religious purposes.

Above records of religious donations made by lower class people clearly indicate that a large number of weaker class people of our ancient Indian society adopted sramaṇic (Buddhist and Jain) religious cult inspite of Brahmanical religious cult in which they got no respectable position in previous centuries. Kushana rulers who accepted Buddhism, provided them (weakers) full freedom regarding their numerous facilities in socio-economic and religious activities. Kushana rulers politically patronised these weaker sections of our ancient Indian society for their betterment. It seems that majority of weaker sections of Kushana society who were previously ignored by our

Brahamaical social order, got full freedom in all walks of their lives. Hence, they adopted different types of occupations, earned a lot by dint of their hard labour, donated for the cultural and religious enrichment and made a rich contribution in the development of Kushana economy, also. It is only due to the encouragement from rulers, they (weakers) developed their skills and new techniques in development of different Art, Crafts and Architecture, etc. These are the contributions of weaker sections of Kushana Era which proved them as worthy of the backbone of our Indian economy, art and culture.

Manav Sanskriti Shodh Sansthan, Varanasi is grateful to Dr. B.R. Mani, Vice Chancellor, National Museum Institute of History of Art, Conservation & Museology, Janpath, New Delhi and Padma Shri Prof. Ram Harsh Singh, Patron, Manay Sanskriti Shodh Sansthan, Varanasi and Founder Vice Chacellor of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Rajasthan Ayurved University, Jodhpur and distinguished Professor, Department of Kayachikitsa, Faculty of Ayurveda, IMS, BHU for his valuable suggestions from time to time. We are also thankful to Prof. Om Prakash, Former Vice Chancellor, M.J.P. University, Berelly, (U.P.) and Dr. Ghanshyam Singh, President, Manay Sanskriti Shodh Sansthan for their kind support. We are also grateful to the Associate Editors of the Journal namely Dr. Vinay Kumar, Assistant Professor, Dept. of AIHC and Archaeology, BHU and Dr. Baleshwar Prasad, Assistant Professor, Dept. of Philosophy and Religion, BHU, Varanasi for going through all the papers and doing the proof reading. We are also thankful to all the writers, members of editorial board, life members of Manay Sanskriti Shodh Sansthan and all the members of the Management Committee for their help and support.

December 2018 Varanasi

Dr. Jhinkoo Yadav